Total Pages : 4

11A01

B.A. (Semester-I) (NEP) Examination, 2025

F.C.-HINDI LANGUAGE

(Hindi Bhasha-I)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 35

निर्देश : यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है। सभी दो खण्डों के प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए। अंकों का विभाजन प्रत्येक खण्ड में दिया गया है।

खण्ड-अ

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

निर्देश : सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है। [5×1=5]

1. (i) कवि 'निराला' का पूरा नाम लिखिये।

(ii) 'भोलाराम का जीव' के लेखक का नाम बताइए।

(iii) रात और संध्या के बीच के समय को क्या कहते हैं?

(iv) 'संक्षिप्त' शब्द का विलोम शब्द क्या है?

(v) 'ऊँट के मुँह में जीरा' मुहावरे का अर्थ बताइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

निर्देश : सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है। [5×2=10]

2. (i) 'भारत माता' कविता का आशय स्पष्ट कीजिये।

(ii) 'भोलाराम का जीव' में लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?

(iii) गाँधीजी ने नशे के शौक की पूर्ति के लिए क्या-क्या किया?

(iv) 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

(v) 'समास' किसे कहते हैं?

खण्ड-ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का है। [4×5=20]

इकाई-I

3. 'भारत-वंदना' कविता के रचनाकार का परिचय देते हुए कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिये।

4. 'भोलाराम का जीव' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

इकाई-II

5. समास की परिभाषा देते हुए इसके भेदों पर प्रकाश डालिए।

6. संधि की परिभाषा देते हुए इसके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

इकाई-III

7. मुहावरे की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए किन्हीं चार मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

8. पारिभाषिक शब्द से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषता पर प्रकाश डालिए।

इकाई-IV

9. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये :

(i) मानव जीवन का लक्ष्य

(ii) भारतीय संस्कृति

10. निम्नलिखित गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक देते हुए इसका सारांश लिखिये :

"गुरू से ज्ञान प्राप्त करने के केवल तीन उपाय हैं - नम्रता, जिज्ञासा और सेवा। इनमें नम्रता का स्थान प्रथम है। अतः एक आदर्श विद्यार्थी को विनम्र होना चाहिए। नम्रता के साथ-साथ उसे अनुशासन-प्रिय भी होना चाहिए। जो विद्यार्थी अनुशासनहीन होते हैं, वे अपने देश, अपनी जाति, अपने माता-पिता, अपने गुरूजन और अपने कॉलेज के लिए अप्रतिष्ठाकारक होते हैं। अनुशासनहीन छात्र का न तो मानसिक विकास होता है न बौद्धिक ही, वह उन गुणों से सदैव-सदैव के लिए वंचित हो जाता है जो मनुष्य को प्रतिष्ठा के पद पर आसीन करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। अनुशासित छात्र ही आदर्श विद्यार्थी की श्रेणी में आ सकता है। आज के युग का छात्र अनुशासनहीनता दिखाने में अपना गौरव समझता है, इसलिए देश में सभ्य नागरिकों का अभाव-सा होता चला जा रहा है, क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल का नागरिक बनता है।

----x----